समूह से मिले कर्ज से खोली दुकान, हुई आत्मनिर्भर

रांची जिले में नामकुम प्रखंड का एक गांव है नचलदाग. गांव में प्रवेश करते ही जैसे ही गांव की आबादी प्रारंभ होती है, एक बड़ा बरगद का पेड़ दिखता है. ठीक इस पेड़ के नीचे रोजमर्रा की जरूरतों वाली एक दुकान है. दुकान में एक महिला ग्राहकों को सामान देने में व्यस्त है. इस महिला ने जिंदगी की तमाम बाधा को पार करते हुए अपने घर की आर्थिक हालात को बदल डाला और अपनी एक नयी सामाजिक पहचान बनायी. इस महिला का नाम यशोदा देवी है और इनकी पहचान समूह की एक सक्रिय महिला के रूप में होती है.

अपनी दुकान में याशोदा ग्राहकों को समान देती हुई व एक समूह से जुड़ी महिलाएं.

आंध्रप्रदेश का भ्रमण यशोदा के लिए सबसे सुखद समय रहा

बचत के लिए महिलाओं का बढ़ाया उत्साह

सक्रिय महिला के रूप में सामाजिक पहचान से मिली आत्मसंतुष्टि

परेशानी का धैर्य से किया सामना

यशोदा मूलतः झारखंड के सिमडेगा जिला की रहने वाली हैं. करीब 25-26 साल पहले वह विवाह कर रांची जिला के नामकुम प्रखंड के इस गांव में आयी थीं. जब वह अपने ससुराल आयीं तो घर की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी. वह एक साल अपने ससुराल में रही और फिर अपने नैयहर चली आयीं. एक साल नैयहर में रहीं. ससुराल की खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए उन्होंने पिता से आर्थिक सहायता की मांग की. पिता से आर्थिक सहायता प्राप्त कर यशोदा और उनके पति ने एक आटा चक्की लगायी. इस आटा चक्की से दोनों ने अपने रोजगार की शुरुआत की थी. इस गांव में आजीविका मिशन द्वारा वर्ष 2003 के आसपास महिलाओं को समूह बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा था. समूह बनाने के लिए यशोदा ने प्रशिक्षण लिया और चांद महिला समूह का गठन किया. यह गांव का पहला महिला समूह था. समूह में उन्होंने दूसरी गरीब महिलाओं को भी जोड़ा और प्रशिक्षण में बतायी गयी बातों के अनुसार काम किया.

बचत के लिए महिलाओं में लायी जागरूकता

यशोदा अपनी बातों के क्रम में यह बताती हैं कि जब प्रारंभ में महिला समूह बनाने की बात उन्होंने की, तो गांव के लोगों ने बात को गंभीरता से नहीं लिया था. पांच दस रुपये की बचत को मजाक समझा जाता था. कई महिलाएं चूंकि मजदूरी में व्यस्त होती थीं तो उनके पास पैसा होता तो था, लेकिन समूह बना कर बचत करने के विषय पर गंभीर नहीं थीं. वह कहती थीं कि पैसा को बैंक में ही जमा करेंगे तो अच्छा रहेगा. वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी महिलाएं थीं, जिन्हें किसी प्रकार का रोजगार नहीं था और यह पांच रुपया उनके लिए बहुत मायने रखता था. इसलिए उन्होंने समूह में शामिल होने के लिए तुरंत सहमति दे दी और बचत करना प्रारंभ कर दिया. समूह की नियमित बैठक में इन महिलाओं ने बहुत गंभीरता से भाग लिया और बचत के पैसों का सही इस्तेमाल करना सीखा. साथ ही उन्हें सामाजिक मुद्दों पर भी जानकारी दी जाने लगी. इसका परिणाम था कि जहां एक ओर ये महिलाएं आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त हो रहीं थीं, वहीं दूसरी ओर अन्य महिलाओं ने भी समूह बनाने पर विचार करना शुरू कर दिय था. आज इस गांव में लगभग 11 समूह चल रहे हैं. यशोदा के अनुसार गांव में कुल 200 घर हैं और लगभग सभी घरों की महिलाएं समूह से जुड़ी हुई हैं. इन समूहों की देखरेख में यशोदा का महत्वपूर्ण योगदान है. इन समूहों में सात समूह पुराने हैं, जिन्हें जोड़ कर ग्राम संगठन बनाया गया है. इसका नाम नचलदाग महिला आजीविका ग्राम संगठन रखा गया है.

आंध्रप्रदेश के भ्रमण से मिला उत्साह

यशोदा बताती हैं कि वर्ष 2012 में महिला समूह को और अच्छे तरीके से काम करने के लिए आंध्रप्रदेश से दीदी आयीं. इन लोगों ने समूह की सदस्यों को समूह के सुचारु संचालन के लिए प्रशिक्षण दिया. महिलाओं को पुस्तक के लेखा-जोखा, ऋण लेनदेन, समूह में बचत और पैसों का इस्तेमाल करने के संबंध में जानकारी दी गयी. समूह चलाने में यशोदा हमेशा सक्रिय रहीं. प्रशिक्षण के बाद उनके कामों को देखते हुए उनका चयन सक्रिय महिला के रूप में हुआ. अब यशोदा को महिला समूह बनाने के साथ उन्हें प्रशिक्षण देने की जिम्मेवारी सौंपी गयी थी जिसका निर्वाह वह आज बखूबी कर रही हैं. आंध्रप्रदेश की दीदी लोगों के साथ यशोदा ने सहेरा गांव में 15 दिनों तक महिलाओं को प्रशिक्षण दिया. इसके बाद समूह के कार्यकलाप की व्यापक स्तर पर समझ बनाने के लिए उनका चयन जब आंध्रप्रदेश भ्रमण के लिए किया गया . इस पर वे कहती हैं कि यह क्षण उनके लिए सबसे सुखद क्षण था. यह पहला ऐसा मौका था जब वो अपने राज्य से दूसरे राज्य गयी थीं. आंध्रप्रदेश भ्रमण के दौरान यशोदा ने कई ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण किया और समूह के कार्यकलाप को बारीकी से समझा. उनके शब्दों में : जिंदगी में सोचे ही नहीं थे, जहां बाप-दादा नहीं पहुंचे थे, वहां जाने का मौका मिला. आंध्रप्रदेश से लौटने के बाद यशोदा ने चार नये समूह बनाये हैं और इन समूहों को प्रशिक्षण भी दे रहीं हैं. समूह को ऋण लेन-देन, पुस्तक संचालन, बचत आदि की जानकारी दी जाती है साथ ही सामाजिक मुद्दों विशेष कर महिला स्वास्थ्य, महिला हिंसा, गांव के स्कूल का नियमित संचालन, इंदिरा आवास योजना, मनरेगा योजना, आंगनबाड़ी जैसी सभी विषयों पर जानकारी देकर इन महिलाओं को अपडेट रखा जाता है.

आत्मविश्वास ने बदले दिन

यशोदा के आत्मविश्वास ने उनके दिन बदले हैं. अपने पारिवारिक जीवन पर चर्चा करते हुए वह बताती हैं कि उनके दो बेटा और दो बेटी हैं. बड़ी बेटी का विवाह कर दिया है. बाकी बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं. वह अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देने के लिए प्रयासरत हैं. एक नये सामाजिक पहचान बनने के विषय पर वह कहती हैं : गांव में लोगों में एक अलग पहचान बनी है. वह बताती हैं कि उन्होंने दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की है, लेकिन किसी कारणवश मैट्रिक की परीक्षा नहीं दे सकीं. उनके मन में आज भी मैट्रिक की परीक्षा देने का उत्साह बना है. अपने पूर्व के दिनों को याद करते हुए वह बताती हैं कि अब तो खेतीबाड़ी भी करती हैं. दूसरे की जमीन को खेती के लिए ली है. वर्तमान में यशोदा अपने पति और बच्चों के सहयोग से दो दुकान का प्रबंधन कर रही हैं.

शादी कर के आये थी तो घर में एक टाइम का खाना होता था, एक टाइम का नहीं. एक साल तो नैयहर ही में रही. फिर आटा चक्की बैठाया. समूह से जुड़ी तब बचत करना शुरू किया. महिलाओं को समूह से जोड़ने का काम करते थी. चांद महिला समिति नाम से गांव में पहला समूह बना था. तब समूह से मदद मिली. दुकान खोली. हमारी आर्थिक हालात में काफी बदलाव सुधार आया है. अब हमलोगों ने अपने समूह को जोड़ कर ग्राम संगठन बना लिया है. ग्राम संगठन का अपना ऑफिस भी है. ग्राम संगठन को पैसा मिला है, जिससे ऑफिस के लिए भी जरूरी चीजों की खरीदारी की गयी है. मेरा चयन आंध्रप्रदेश भ्रमण के लिए भी हुआ. वहां बहुत कुछ सीखने को मिला है. अब सक्रिय महिला के रूप में काम कर रही हूं. समूह बनाने के साथ प्रशिक्षण देने का भी काम कर रही हूं. इसके साथ महिलाओं को सामाजिक मुद्दों, जैसे बाल विवाह, शिक्षा, स्वास्थ्य को लेकर भी जागरूक करते हैं. उन्हें सरकारी योजनाओं जैसे मनरेगा, वृद्धावस्था पेंशन, इंदिरा आवास की जानकारी दी जाती है.

यशोदा देवी, निचलादाग, नामकुम प्रखंड, रांची.

2009 में 15वीं लोकसभा के लिए हुए चुनाव में 8070 उम्मीदवारों ने चुनाव मैदान में भाग्य अजमाया था. इनमें से 1158 उम्मीदवारों पर आपराधिक मुकदमे दर्ज थे. 1249 उम्मीदवार करोड़पति थे. जबकि 244 ऐसे उम्मीदवार थे, जिन्होंने अपनी किसी तरह की संपत्ति नहीं होने की घोषणा की.